

६. नियम सबके लिए

बताओ तो !



- (१) परिवहन के नियम कौन-से हैं ?
- (२) तुम्हारे अनुसार इन नियमों का पालन करने से क्या होगा ?
- (३) तुम्हारे अनुसार इनमें से किस नियम में परिवर्तन होना चाहिए ?
- (४) तुम्हारे अनुसार परिवहन अनुशासन के लिए और कौन-से नियम होने चाहिए ?

परिवहन सुचारु रूप से चलाने के लिए कुछ नियम होते हैं और हम इनका पालन करते हैं। इसी प्रकार सामाजिक जीवन में प्रत्येक व्यक्ति को जो काम करना है; उसके लिए कुछ नियम होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति का उत्तरदायित्व तथा कर्तव्य क्या है; इसके लिए नियम बनाने पड़ते हैं। नियमों का पालन करने से हमारे व्यवहार में अनुशासन का निर्माण होता है। हम अधिक क्षमता से कार्य कर सकते हैं।

नियम सबके लिए होते हैं। वे सभी के लिए समान रूप से लागू होते हैं। नियमों के आगे कोई भी छोटा अथवा बड़ा नहीं होता। नियमों का पालन न करने पर दंड मिलता है। नियमों का उल्लंघन करने पर दंड देते समय कोई भी भेदभाव नहीं किया जाता। इस प्रकार 'समानता' नियमों का आधार है।

समाज के लिए बनाए गए नियमों में होने वाले परिवर्तन

हमारा सामाजिक जीवन नियमों के आधार पर चलता है। ये नियम हम ही बनाते हैं। ये सबके हित के लिए होते हैं। इसलिए हम इनका पालन करते हैं। समाज के लिए बनाए गए इन नियमों में उचित परिवर्तन करने पड़ते हैं। समाज नियमन के लिए बनाए जाने वाले नियमों और प्रकृति के नियमों में अंतर होता है।

प्रकृति का व्यवहार प्रकृति के नियमों के अनुसार चलता है। प्रकृति के नियम हम बदल नहीं सकते।

सूर्य का उगना तथा अस्त होना अथवा ऋतुचक्र का परिवर्तन कभी भी नहीं रुकता। गुरुत्वाकर्षण बल का नियम बदलता नहीं। समुद्र का ज्वार-भाटा, चंद्रमा की बदलने वाली कलाएँ ये सभी घटनाएँ प्रकृति के नियमों के अनुसार होती रहती हैं। प्रकृति के नियम अधिक स्थिर तथा निश्चित होते हैं। ये कालबाह्य नहीं होते परंतु मनुष्यों के लिए बनाए गए नियमों में परिस्थिति के अनुसार परिवर्तन करने पड़ते हैं। जब हमारा देश अंग्रेजी शासन के अधीन था; उस समय के नियम अलग थे। हमें स्वतंत्रता मिलने के बाद परिस्थिति बदली और उसके अनुसार सामूहिक जीवन के नियम बदले। उदा. जब स्वतंत्रता मिली; उस समय २१ वर्ष के नागरिक को मतदान का अधिकार था। सन १९८८ के बाद मतदान का अधिकार व्यक्ति को १८ वर्ष पूर्ण हो जाने पर दिया गया।

करके देखो

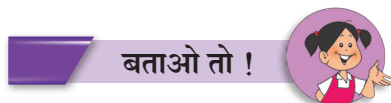


अपने अभिभावकों और दादा-दादी से यह पूछो कि उनके समय में विद्यालय में कौन-से नियम थे। अपनी कॉपी में अपने-अपने अभिभावकों तथा दादा-दादी के लिए तीन स्तंभ तैयार करो। इन तीन स्तंभों में विद्यालय से संबंधित नियमों के विषय में जानकारी भरकर उनकी तुलना करो। कौन-से नियम बदल गए हैं और कौन-से नहीं बदले; इसपर चर्चा करो।

इसे सदैव ध्यान में रखो !



लड़का तथा लड़की अथवा स्त्री और पुरुष का स्तर समान होता है। उन्हें विकास के समान अवसर मिलने चाहिए।



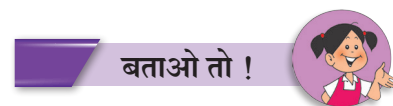
- (१) तुम लड़की के प्रश्न का क्या उत्तर दोगे ?
- (२) तुम्हारे अनुसार लड़का और लड़की का भेदभाव और किन-किन बातों में किया जाता है ?

लड़का और लड़की के बीच भेदभाव करना अनुचित है। लड़कियों को आहार कम देना अथवा उन्हें विद्यालय में न भेजना उनपर अन्याय करना है। ऐसा अन्याय समाज के अन्य घटकों पर भी होता दिखाई देता है।

इन चित्रों में तुम्हें कौन-सा अन्याय होता हुआ लग रहा है ?



किसी भी प्रकार का अन्याय न हो इसलिए नियम बनाने पड़ते हैं।



नीचे नियमों की एक सूची दी गई है। प्रत्येक नियम का एक उद्देश्य है। कुछ नियमों के अनेक उद्देश्य हैं। कक्षा में इनमें से प्रत्येक नियम पर चर्चा करो। 'मुझे ऐसा लगता है।' शीर्षक के अंतर्गत अपने मतों का अंकन करो :

- (१) सार्वजनिक स्थानों पर ध्वनि निक्षेपक पर रात में दस बजे के बाद लगा प्रतिबंध।
- (२) लड़के-लड़कियों के लिए निःशुल्क प्राथमिक शिक्षा।
- (३) निर्माल्य तथा अन्य कूड़ा-करकट नदी में फेंकने पर प्रतिबंध।
- (४) पारिवारिक हिंसा से महिलाओं का संरक्षण।
- (५) बाल मजदूरों की नियुक्ति पर प्रतिबंध।
- (६) जंगल की कटाई तथा शिकार करने पर प्रतिबंध।

हमारे जीवन में हम अनेक रूढ़ियों तथा परंपराओं का भी पालन करते रहते हैं। अपने माँ, पिता जी, दादी जी, दादा जी तथा सगे-संबंधियों को देखकर हम उन परंपराओं का पालन करते हैं। हमारे समाज में कई अच्छी-अच्छी रूढ़ियाँ तथा परंपराएँ हैं। हम त्योहार-उत्सव का सामूहिक आनंद लेते हैं। घर आए अतिथियों का स्वागत करके उनका सम्मान करते हैं। पर्यावरण का



संतुलन बनाए रखने वाली अनेक रीतियों का हम परंपरा से पालन करते हैं। प्राणियों के प्रति प्रेम एवं कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। अहिंसा और शांति जैसे मूल्य प्राचीन काल से ही हमारे सामाजिक जीवन में रहे हैं।

ऐसा होने पर भी कुछ रूढ़ियाँ तथा परंपराएँ अनुचित हैं। वे हमारे समाज के लिए लाभप्रद नहीं हैं। उदा. जातिभेद के कारण समाज में ऊँच-नीच की खाई का निर्माण हुआ। विषमता बढ़ गई। अस्पृश्यता एक अमानवीय और अन्यायकारी प्रथा थी। स्वतंत्र भारत के संविधान ने अस्पृश्यता की प्रथा समाप्त कर दी।

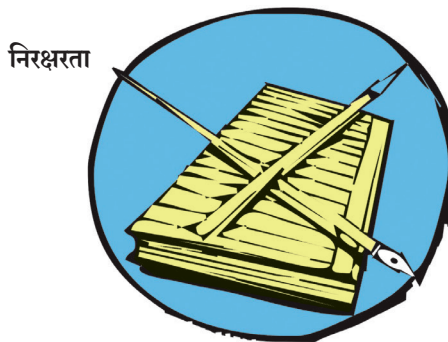
कई बार कानून बनाकर अनिष्टकारी रूढ़ियों का निर्मूलन करना पड़ता है। हमारे देश में सती प्रथा तथा बाल विवाह जैसी रूढ़ियों अथवा प्रथाओं पर कानून बनाकर प्रतिबंध लगा दिया गया। जादू-टोना करके लोगों को ठगने जैसी कुरीति पर प्रतिबंध लगाने वाला कानून सर्वप्रथम महाराष्ट्र में बनाया गया। विवाह में दहेज लेने की प्रथा पर कानून द्वारा प्रतिबंध लगा दिया गया है।

गलत रूढ़ियों-परंपराओं के कारण समाज के कुछ लोगों की उपेक्षा होती है। वे शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते। उन्हें प्रगति के अवसर नहीं मिलते। रोजगार नहीं मिलता। इससे गरीबी बढ़ती है। गरीबी और शिक्षा का अभाव हमारे सामाजिक जीवन की बड़ी बाधाएँ हैं। इन्हें दूर किया जाना चाहिए तो ही हम सभी एक साथ आगे बढ़ सकते हैं।

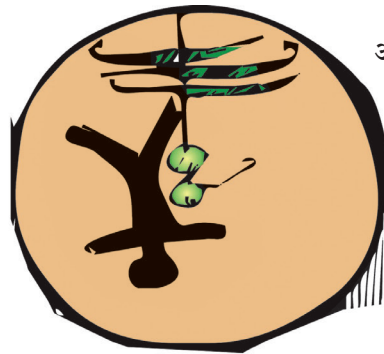
पर्यावरण संरक्षण

समाज में जिस प्रकार समता तथा न्याय स्थापित करने के लिए कानून आवश्यक होते हैं उसी प्रकार पर्यावरण के संरक्षण के लिए भी कानून की आवश्यकता होती है। हम अनेक बातों में प्रकृति पर निर्भर होते हैं। हमारी अनेक आवश्यकताओं की पूर्ति प्रकृति के कारण होती है। हमारे बाद आने वाली पीढ़ियों के लिए भी प्राकृतिक संसाधनों की आपूर्ति होनी चाहिए। इसके लिए हमें इन संसाधनों का संरक्षण करना चाहिए। इनका उपयोग सावधानीपूर्वक करना चाहिए।

हमारी सामाजिक समस्याएँ



निरक्षरता



अंधविश्वास



बालविवाह



बालमजदूरी

क्या तुम जानते हो ?



- जातिभेद, स्त्री-पुरुष विषमता एवं स्त्री शिक्षा का अभाव ये सभी हमारे समाज की प्रमुख बाधाएँ थीं। इन्हें दूर करने का प्रयत्न महात्मा जोतीराव फुले, राजर्षि शाहू महाराज तथा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ने किया। स्त्रियों की शिक्षा के लिए सावित्रीबाई फुले को बहुत बड़ा संघर्ष करना पड़ा। इनकी सहयोगी फातिमा शेख ने इनको बहुमूल्य सहयोग दिया। महर्षि धोंडो केशव कर्वे ने स्त्री शिक्षा के लिए बड़े कार्य किए।

इन सभी समाजसुधारकों के कार्य हमारे समाज में उचित परिवर्तन लाने में उत्तरदायी सिद्ध हुए।

हमने क्या सीखा ?



- मनुष्यों के लिए बनाए गए नियमों में परिवर्तन होते हैं।
- प्राचीन काल में नियम धार्मिक परंपराओं तथा सामाजिक रूढ़ियों के रूप में थे।
- अनिष्टकारी तथा अमानवीय रूढ़ियों और परंपराओं के विरोध में कानून बनाए जाते हैं।

स्वाध्याय

१. रिक्त स्थानों में उचित शब्द लिखो :

- (अ) हमारा सामाजिक जीवन के आधार पर चलता है।
- (आ) स्वतंत्र भारत के संविधान ने की प्रथा समाप्त कर दी।
- (इ) गलत रूढ़ियों-परंपराओं के कारण समाज के कुछ लोगों की होती है।

२. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर एक-एक वाक्य में लिखो :

- (अ) नियम क्यों बनाने पड़ते हैं ?
- (आ) हमारे सामाजिक जीवन में कौन-कौन-से मूल्य प्राचीन काल से रहे हैं ?
- (इ) हमारे सामाजिक जीवन की बड़ी बाधाएँ कौन-सी हैं ?

३. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखो :

- (अ) किन अनिष्टकारी प्रथाओं पर कानून ने प्रतिबंध लगाया ?
- (आ) पर्यावरण के संरक्षण के लिए नियम क्यों बनाने पड़ते हैं ?

उपक्रम :

विद्यालय में निम्न अवसरों पर तुम जिन नियमों का पालन करते हो, उनकी सूची बनाओ।

१. परिपाठ के समय
२. मध्याह्न भोजन के समय
३. क्रीडांगण में
४. विद्यालय के वाचनालय में

* * *

